Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-1, June-2018

भरखा नाले के चित्रित शैलाश्रय : एक नवीन खोज
अशोकनगर जिले के विशेष संदर्भ में

सूल्तान सलाहुद्दीन
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.),
ई–मेलः sultansgo@gmail.com मो0 नं0:– 9450194671

प्रारम्भिक मानव ने किसी न किसी जलीय स्रोत के समीप के स्थलों को ही अपने निवास स्थल के रुप में चयन किया जिनमें सर्वाधिक पहाड़ी तथा पठारी नदियों के किनारों पर स्थित प्राकृतिक शैलाश्रय प्रमुख हैं। प्रारम्भिक मानव द्वारा प्राकृतिक शैलाश्रयों में निवास करने के साथ–साथ शैलाश्रयों की दीवारों तथा छतों पर अपने दैनिक जीवन में किए गए क्रिया–कलापों को व्यक्त करने के लिए विविध प्रकार के चित्रों को भी चित्रित किया गया जो कालान्तर में अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने के लिए एक विशेष प्रकार की कला के रुप में विकसित एवं प्रसिद्ध हुई। प्रारम्भिक मानव द्वारा अपने दैनिक कार्यों तथा तत्कालीन समाज से सम्बन्धित जिन चित्रों को प्राकृतिक शैलाश्रयों में चित्रित किया उन्हें शैलचित्र के नाम से जाना जाता है। जिस प्रकार किसी देश–काल तथा परिस्थिति को समझने के लिए उस स्थल से प्राप्त पुरावशेषों का अध्ययन आवश्यक है, उसी प्रकार किसी क्षेत्र विशेष के तत्कालीन पर्यावरण तथा समाज की जानकारी प्राप्त करने के लिए उस स्थल से प्राप्त शैलचित्रों का अध्ययन भी आवश्यक है।

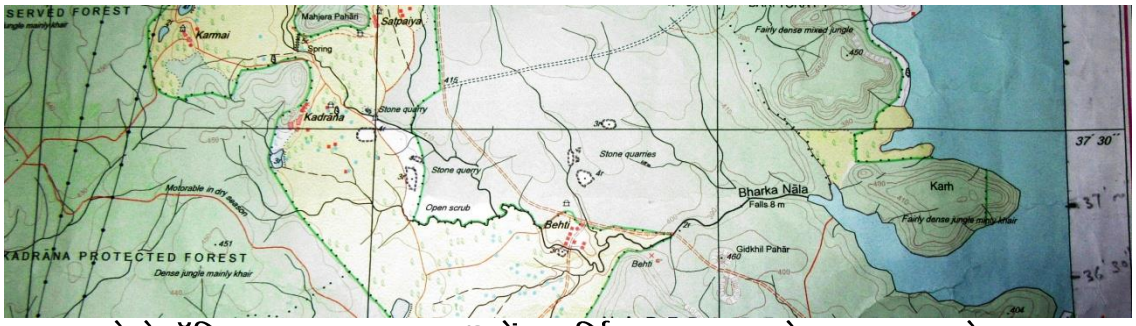

टोपोग्रॉफिक नक्शा क्र. 54L/2 में प्रदर्शित 'भरखा नाले' का प्रवाह क्षेत्र

'भरखा' नामक बरसाती नाला मध्यप्रदेश में अशोकनगर जिले की चंदेरी तहसील में प्रवाहित होता है। यह नाला चंदेरी तहसील में कडराना तथा नरेड़ी के संरक्षित वन्य क्षेत्र के पठारी भू–भाग से निर्मित होकर सतपिया, कडराना तथा बेहटी नामक गाँवों से प्रवाहित होते हुए पूरब दिशा में लगभग 22 किलो मीटर का सफर तय करते हुए 24^0 36′ 58′′ उत्तरी अक्षांश तथा 78^0 13′ 10′′ पश्चिमी देशांतर पर बेतवा नदी में मिल जाता है। भरखा नाले के प्रवाह क्षेत्र में लाल बलुए पत्थर से छोटे–बड़े प्राकृतिक शैलाश्रय विद्यमान हैं, इन्हीं शैलाश्रयों को प्रारम्भिक मानव द्वारा अपने निवास स्थान के रुप में प्रयोग किया गया तथा प्रारम्भिक मानव द्वारा इन शैलाश्रयों में अपनी उपस्थिति के चिन्हों को विभिन्न चित्रों के माध्यम से दिखलाने का भी प्रयास किया गया। यह पहला अवसर नहीं है कि अशोकनगर जिले में कोई चित्रित शैलाश्रय से सम्बन्धित पुरास्थल प्राप्त हुआ हो। इससे पहले सन् 1975–76 ई. में जब अशोकनगर गुना जिले का एक भाग हुआ करता था तब इस क्षेत्र से पहली बार शैलचित्रों से सम्बन्धित पुरास्थल

की खोज हुई थी। इस खोज को करने का श्रेय भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के सी. वी. त्रिवेदी तथा टी. वी. जी. शास्त्री जी को जाता है। सी. वी. त्रिवेदी महोदय ने सन् 1975–76 ई. में गुना (अशोकनगर) जिले के चंदेरी तहसील में बेसरा तथा नानोन गाँवो के पास से प्रवाहित होने वाली '**ओर**' नदी पर स्थित '**चुड़ैल का डेरा**' नामक स्थान पर स्थित शैलचित्रों से सम्बन्धित पुरास्थल की खोज की थी। सी. वी. त्रिवेदी महोदय की यह खोज '***मोर पेन्टेड रॉक शेल्टर्स फ्रॉम मध्यप्रदेश***' नामक शोध–पत्र के रुप में 1997 में ***इफेक्ट ऑफ इण्डियन सिविलाईजेशन ,भाग–1*** पुस्तक में प्रकाशित भी हुआ। उपरोक्त के अतिरिक्त समय–समय पर अशोकनगर जिले के कई स्थलों से शैलचित्रों के होने की जानकारी मिलती रही किन्तु इस जिले में शैलचित्रों से सम्बन्धित पुरास्थलों पर पर्याप्त शोध कार्य न होने से अन्य स्थलों के विषय में जानकारी प्राप्त नही हो सकी है।

अशोकनगर जिले के चंदेरी तहसील में पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के दौरान शोधार्थी को **'भरखा नाले'** के प्रवाह क्षेत्र पर चित्रित शैलाश्रयों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई। प्राप्त जानकारी के अनुसार शोधार्थी द्वारा दिनाँक 09 अक्टूबर 2017 को पुरातात्त्विक सर्वेक्षण किया गया। पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 'भरखा नाले' के प्रवाह क्षेत्र में एक छोटा प्राकृतिक जल प्रपात है जिसे स्थानीय लोगों द्वारा **'भरखा'** नाम से पुकारा जाता है। चित्रित शैलाश्रयों के अतिरिक्त इस नाले के प्रवाह क्षेत्र की पहाड़ियों पर बड़ी मात्रा में बिखरे हुए पाषाण उपकरणों की भी जानकारी प्राप्त हुई, जो इस क्षेत्र पर प्रारम्भिक मानव की उपस्थिति को प्रमाणित करने का प्रमुख स्रोत हैं। शोधार्थी द्वारा इस स्थल के पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के दौरान चित्रित शैलाश्रयों का छायाचित्र लिया गया तथा इस नदी के आस–पास की पहाड़ियों पर बिखरे हुए लघु एवं सूक्ष्म पाषाण उपकरण भी एकत्रित किये गये।

'भरखा नाला' एवं उसके किनारों पर स्थित प्राकृतिक शैलाश्रयों का सामान्य दृश्य

भरखा नाले के प्रवाह क्षेत्र से प्राप्त चित्रित शैलाश्रय–

'भरखा नाले' के प्रवाह क्षेत्र में प्रवाहित नाले के दाहिने ओर कुल पाँच (05) चित्रित शैलाश्रय हैं। शोधार्थी ने इस शोध पत्र में चित्रित शैलाश्रयों के चित्रों का शैलाश्रय क्रमांक के अनुसार विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है–

भरखा नाले के चित्रित शैलचित्रों का विवरण निम्नवत् है–

शैलाश्रय क्रमांक एक के शैलचित्रः–

शैलाश्रय क्रमांक एक की छत पर लाल रंग का प्रयोग करते हुए मोटी रेखाओं के माध्यम से हिरन का चित्र बना हुआ देखा जा सकता है। हिरण की चित्रण शैली तथा रंग संयोजन का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा कि सकता है कि शैलचित्रों के चित्रण की अवनती को दर्शाता हुआ यह चित्र प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल में चित्रित किया गया होगा।

शैलाश्रय क्रमांक दो के शैलचित्रः–

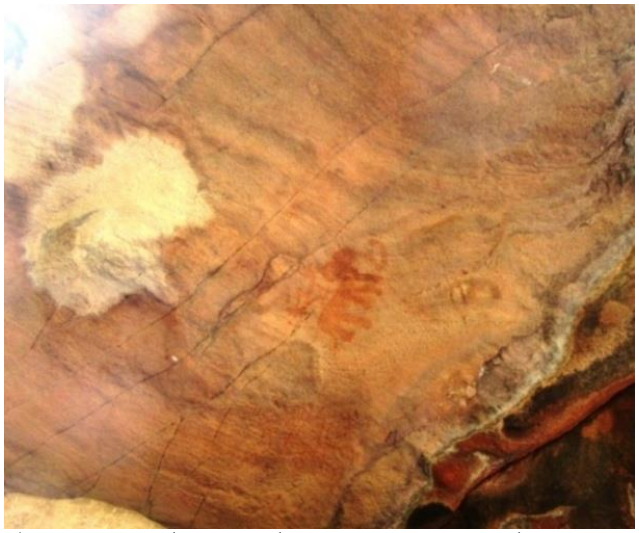

शैलाश्रय क्रमांक दो में शैलाश्रय की छत पर लाल रंग का प्रयोग करते हुए पूरक शैली में हाथी का चित्र बना हुआ है जिसके कान खड़े हुए हैं। चित्र में हाथी के पीठ पर बैठे हुए मानव को हाथी के ऊपर से गिरता हुआ दिखलाया गया है। हाथी तथा गिरते हुए मानव के चित्र को देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि तत्कालीन मानव ने क्रोध युक्त हाथी को चित्रित करने का प्रयास किया गया है, जो क्रोध में आने के कारण अपने महावत को अपनी पीठ से गिरा रहा है। इस शैलचित्र की चित्रण शैली, रंग संयोजन तथा भाव को देख कर यह कहा जा सकता है कि इस चित्र को प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल के मानव द्वारा चित्रित किया गया होगा।

शैलाश्रय क्रमांक तीन के शैलचित्रः–

शैलाश्रय क्रमांक तीन में प्राकृतिक जमाव (पेटिनेशन) तथा आक्षेपण (सुपर इम्पोजीशन) के कारण कई शैलचित्रों को पहचान पाना कठिन है। सामान्यतः जिन शैलचित्रों की पहचान की

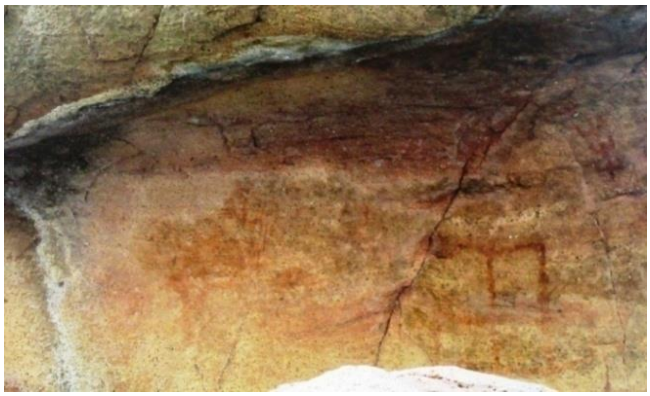

जा सकती है उनमें लाल रंग के माध्यम से एक चित्र आयताकार खानों का है, सम्भवतः यह आयताकार खाने किसी आवास निर्माण का खाका (हाउस प्लानिंग) का चित्र प्रतीत होता है। आयताकार खानों की चित्रण शैली, रंग संयोजन तथा आक्षेपित चित्रों का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि आयताकार खानों का

चित्रण ऐतिहासिक काल में किया गया होगा। इस शैलाश्रय में आयताकार खानों के अतिरिक्त लाल रंग से चित्रित पक्षी समूह का चित्र भी देख जा सकता है, पक्षी समूह के चित्रों का रंग संयोजन तथा चित्रण शैली का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि पक्षी समूह के चित्रों को पूर्व ऐतिहासिक काल में चित्रित किया गया होगा।

शैलाश्रय क्रमांक चार के शैलचित्रः–

शैलाश्रय क्रमांक चार में शैलाश्रय की दीवार पर गहरे लाल रंग का प्रयोग करते हुए मोटी रेखाओं के माध्यम से चित्रित दो मानव के चित्रों को देखा जा सकता है। इस चित्र में मानव के शरीर को डमरु आकार में मुखौटा शैली के अर्न्तगत चित्रित किया गया है। शैलाश्रय क्रमांक चार में चित्रित मानव के चित्रों की चित्रण शैली, रंग संयोजन तथा शैलाश्रय में प्राकृतिक जमाव (पेटिनेशन) का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि मानव के चित्रों को ताम्रपाषाणकाल के अन्तिम चरण के में चित्रित किया गया होगा।

शैलाश्रय क्रमांक पाँच के शैलचित्रः–

शैलाश्रय क्रमांक पाँच इस पुरास्थल का सबसे महत्त्वपूर्ण शैलाश्रय है, इसी शैलाश्रय में सर्वाधिक चित्र विद्यमान हैं जिनका चित्रण प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक हुआ है। इस शैलाश्रय से लिए गए विभिन्न छायाचित्रों के माध्यम से शैलाश्रय क्रमांक पाँच के शैलचित्रों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

छायाचित्र संख्या एक के चित्रः–

शैलाश्रय क्रमांक पाँच में प्राकृतिक जमाव (पेटिनेशन) तथा शैलचित्रों का एक–दूसरे पर आक्षेपण (सुपर इम्पोजीशन) होने के कारण कई शैलचित्रों को पहचान पाना कठिन है, किन्तु कुछ शैलचित्रों को सरलता से पहचाना जा सकता है। उन्हीं चित्रों मे से पहला चित्र समूह शैलाश्रय की दीवार पर बना हुआ देखा जा साकता है। शैलाश्रय की दीवार पर गहरे लाल रंग का प्रयोग करते हुए मोटी रेखाओं के माध्यम से यष्टि रुप (स्टिक शेप) में चित्रित मानव तथा मानव के समीप ही लाल रंग से कुछ अन्य चित्र भी बने

हैं। चित्रों के देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि तत्कालीन मानव ने किसी पक्षी सम्भवतः मयूर को बनाने का प्रयास किया है। इस छायाचित्र के चित्रों की चित्रण शैली, चित्रों का भाव तथ रंग संयोजन का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि ये चित्र ताम्रपाषाणकाल के मानव द्वारा चित्रित किया गया होगा।

छायाचित्र संख्या दो के चित्रः–

शैलाश्रय क्रमांक पाँच की दीवार पर छायाचित्र एक के निकट लाल रंग का प्रयोग करते हुए यष्टि रुप (स्टिक शेप) में चित्रित मानव के चित्र को देखा जा सकता है। इस मानव के चित्र को मोटी रेखाओं के माध्यम से मासल्य शरीर युक्त मुखौटा शैली (मास्क्ड शेप) में चित्रित किया गया है। मानव के इस चित्र की चित्रण शैली, रंग संयोजन, शैलाश्रय में प्राकृतिक जमाव (पेटिनेशन) तथा चित्र के भाव का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि इस शैलचित्र को ताम्रपाषाण काल के अन्तिम चरण में चित्रित किया गया होगा।

छायाचित्र संख्या तीन के चित्रः–

शैलाश्रय क्रमांक पाँच में एक अन्य स्थान पर दोहरी लाल रंग का प्रयोग करते हुए रेखाओं के माध्यम से एक आयत बना हुआ देखा जा सकता है, कोनों पर छोटे–छोटे गोले बने हुए आयत के मध्य में एक लाल रंग से मानव की आकृति बनी हुई है। इस देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि मानव ने अपने लिए चार खम्बों का चित्र आयताकार आवास को बनाने का जिसके चारो होगा। इस चित्र की चित्रण शैली, हैं तथा रंग संयोजन तथा चित्र के भाव का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि यह चित्र प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल के मानव द्वारा चित्रित किया गया होगा।

छायाचित्र संख्या चार के चित्रः–

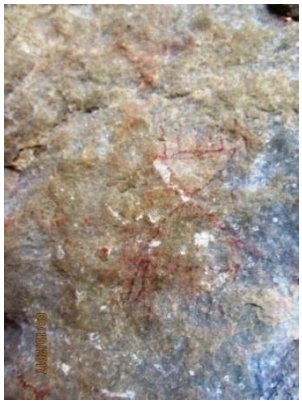

शैलाश्रय क्रमांक पाँच में एक अन्य स्थान पर लाल रंग का प्रयोग करते हुए पतली रेखाओं के माध्यम से डमरु आकार में सम्भतः एक स्त्री का चित्र बना हुआ है जिस पर प्राकृतिक जमाव (पेटिनेशन) तथा अन्य शैलचित्रों का आक्षेपण (सुपर इम्पोजीशन) होने के कारण कुछ धुँधला हो गया है। इस चित्र की चित्रण शैली, रंग संयोजन, प्राकृतिक जमाव तथा अन्य शैलचित्रों के आक्षेपण का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि यह चित्र ताम्रपाषाण काल के प्रारम्भिक चरण के मानव द्वारा चित्रित किया गया होगा। इस चित्र को देख कर यह भी कहा जा सकता है कि यह चित्र सम्भवतः इस शैलाश्रय के प्राचीनतम चित्रों में से एक है।

छायाचित्र संख्या पाँच के चित्रः–

शैलाश्रय क्रमांक पाँच में ही एक अन्य स्थान पर लाल रंग का प्रयोग करते हुए पूरक शैली में मासल्य काया युक्त हिरण का चित्र बना हुआ है। हिरण के चित्र की चित्रण शैली तथा रंग संयोजन का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि हिरण के चित्र को ताम्रपाषाण काल के अन्तिम चरण में चित्रित किया गया होगा। इस छायाचित्र में हिरण के चित्र के निचले भाग पर लाल रंग की एक पतली रेखा देखी जा सकती है किन्तु शैलाश्रय के इस स्थान से पपड़ी उखड़ने के कारण पतली रेखा से निर्मित चित्र को ज्ञात नही किया जा सकता है।

छायाचित्र संख्या छः के चित्रः–

शैलाश्रय क्रमांक पाँच में एक अन्य स्थान पर लाल रंग के माध्यम से मोटी रेखाओं के द्वारा ज्यामितीय आकार में हिरण का चित्र बना हुआ देखा जा सकता है, जिसके शरीर को तिरछी रेखाओं के माध्यम से अलंकृत करने का प्रयास किया गया है। हिरण के चित्र की चित्रण शैली तथा रंग संयोजन का अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि इस चित्र को ताम्रपाषाण काल के अन्तिम चरण में चित्रित किया गया होगा।

'भरखा नाले' के प्रवाह क्षेत्र से प्राप्त शैलाश्रयों में चित्रित विभिन्न प्रकार के चित्रों, शैलचित्रों का एक दूसरे पर आक्षेपण (सुपर इम्पोजीशन), शैलचित्रों की चित्रण शैली, रंग संयोजन तथा शैलाश्रयों में प्राकृतिक जमाव (पेटिनेशन) के प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मध्य भारत में स्थित शैलचित्रों से सम्बन्धित अन्य पुरास्थलों के समान ही अशोकनगर जिले के चंदेरी तहसील में प्रवाहित होने वाले **'भरखा नाले'** से प्राप्त शैलचित्र हल्के एवं गहरे लाल रंगों का प्रयोग करते हुए पतली एवं मोटी रेखाओं के माध्यम से विभिन्न शैलियों में चित्रित किए गए हैं। यहाँ से प्राप्त शैलचित्रों की चित्रण शैली को देख कर यह कहा जा सकता है कि इन शैलचित्रों को ताम्रपाषाण काल के प्रारम्भिक चरण से लेकर ऐतिहासिक काल तक चित्रित किया गया होगा। जिस प्रकार मध्यप्रदेश के भीमबेटका, आदमगढ़, पचमढ़ी तथा अन्य पुरास्थलों से प्राप्त शैलचित्रों एवं पुरास्थल से प्राप्त पुरावशेषों का अध्ययन कर पुरावशेषों तथा शैलचित्रों के मध्य सह–सम्बन्ध स्थापित किया गया है। उसी प्रकार **'भरखा नाले'** के प्रवाह क्षेत्र के निकट की पहाड़ियों से प्राप्त विभिन्न पुरावशेषों (पाषाण उपकरणों) का भी अध्ययन कर यहाँ के शैलचित्रों और पुरावशेषों के मध्य सह–सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

चंदेरी तहसील के संरक्षित वन्य की पहाड़ी तथा पठारी क्षेत्र की अलग–अलग जलधाराओं के कारण ही इस नाले में लगभग साल भर जल प्रवाहित होता रहता है। सम्भवतः यही कारण है कि प्रारम्भिक मानव द्वारा इस स्थान को अपने निवास स्थान के लिए चयन किया होगा। जलीय स्रोत के साथ–साथ इस स्थान के भौगोलिक परिवेश को देखकर यह कहा जा सकता

है कि प्रागैतिहासिक मानव के जीवन यापन करने के लिये यह उपयुक्त स्थान रहा होगा। यहाँ पर धूप, वर्षा तथा जाड़े से बचने के लिये प्राकृतिक शैलाश्रय विद्यमान हैं, जिन्हें प्रागैतिहासिक काल के मानव अपने निवास स्थान के रुप में प्रयोग किया करते थे। साथ ही यहाँ के शैलचित्रों में विविध प्रकार के पशुओं का चित्रण होना यह बतलाता है कि यहाँ की पहाड़ियों तथा आस–पास के जंगल में उपयुक्त मात्रा में पशुओं की उपलब्धता रही होगी।

अतः यह कहना सम्भव है कि प्रारम्भिक मानव द्वारा यहाँ के जंगलों में रहने वाले पशुओं का शिकार कर अपने भोजन के रुप में प्रयोग किया जाता होगा। यहाँ की पहाड़ी पर क्वार्ट्ज, चर्ट, चॉल्सेडोनियन आदि पत्थरों का बहुत मात्रा में पाया जाना इस ओर सिद्ध करता है कि इस स्थान पर प्रागैतिहासिक काल के मानवों को शिकार सम्बन्धी उपकरण निर्माण की सामग्री आसानी से प्राप्त हो जाती थी। जिसके प्रमाण आज भी पाषाण उपकरणों के रुप में यहाँ पर विद्यमान हैं। इस स्थल के प्रारम्भिक मानव को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् मनोरंजन करने के लिये भी साधन प्राप्त हो जाया करते थे, जिनमें हेमेटाइड पत्थर प्रमुख है जो यहाँ की पहाड़ियों पर आसानी से मिल जाते हैं। इन्हीं पत्थरों के माध्यम से प्रागैतिहासिक मानव द्वारा शैलचित्रों का चित्रण किया जाता था, जो आज भी यहाँ के शैलाश्रयों में विद्यमान है जिनके माध्यम से तत्कालीन समय के मानवीय समाज तथा घटनाओं को प्रकाश में लाना आसान हो जाता है।

मध्यप्रदेश के अशोकनगर जिले में विद्यमान **'भरखा नाले'** एवं उसके आस–पास की पहाड़ियाँ मध्य भारत के अन्य प्रागैतिहासिक पुरास्थलों के समान ही अपनी एक अलग और विशिष्ट पहचान रखती है। इस पुरास्थल की विशिष्टता यहाँ से प्राप्त शैलचित्रों तथा पाषाण उपकरणों में स्पष्ट परिलक्षित होती है, इनका अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि जिस प्रकार के पशु–पक्षियों का चित्रण मध्य भारत के अन्य पुरास्थलों पर हुआ है, उसी प्रकार के पशु–पक्षियों का चित्रण 'भरखा नाले' में भी किया गया है। पशु–पक्षियों के चित्र इस बात को सिद्ध करते हैं कि तत्कालीन समय में सम्पूर्ण मध्य भारत में पशु–पक्षियों की लगभग एक ही समान की प्रजातियां विद्यमान रही होंगी। शैलचित्रों के अतिरिक्त इस पुरास्थल से प्राप्त पाषाण उपकरण भी मध्य भारत के अन्य पुरास्थलों से प्राप्त पाषाण उपकरणों से समानता रखते हैं। इन समस्त पाषाण उपकरणों को बनाने में लगभग एक ही प्रकार की तकनीकों का प्रयोग किया जाना भी इस बात को सिद्ध करता है कि मध्य भारत में पाषाण उपकरण निर्माण तकनीक का विकास समानान्तर चलता रहा।

उपर्युक्त तथ्यों की विवेचना करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि अशोकनगर जिले में प्रवाहित **'भरखा नाले'** के शैलचित्र मध्यप्रदेश में स्थित शैलचित्रों के क्रमिक विकास सम्बन्धी अध्ययन में विशेष भूमिका निभा सकता है। यदि इस पुरास्थल पर सूक्ष्म तथा विस्तृत शोध कार्य किया जाये तो यह कहना गलत नहीं होगा कि इस पुरास्थल से प्रारम्भिक मानव जीवन के क्रमिक विकास सम्बन्धी महत्वपूर्ण साक्ष्य अवश्य प्रकाश में आएंगें जो अशोकनगर जिले के साथ–साथ मध्यप्रदेश की ऐतिहासिक उपलब्धि में भी वृद्धि कर प्रमुख पुरास्थलों में समाहित हो जाएँगें।

संदर्भ सूची–

- पाण्डेय, एस. के., *इन्डियन रॉक आर्ट,* आर्यन बुक्स इन्टरनेशनल, नई दिल्ली, 1993.
- अग्रवाल, आर. एन., *शैल चित्र कला – एक अध्ययन,* सम्पा. रविन्द्र नाथ अग्रवाल, इण्डियन रॉक आर्ट वाईस–ए–वाईस एथनोग्राफी, गुप्ता पब्लिशर्स, नागपुर, महाराष्ट्र, 2000.

- अहमद, मशकूर, *सागर सम्भाग के नये शैलचित्र केन्द्र*, सम्पा. आर. एन. मिश्र, जरनल ऑफ द मध्यप्रदेश इतिहास परिषद, संस्करण 21, भोपाल, मध्यप्रदेश, 2006.
- देशपाण्डे, एम. एन., *आर्कियोलॉजी 1972–73 ए रिव्यू*, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इन्डिया, नाबा मुद्रण प्राईवेट लि., कलकत्ता, 1978.
- खान, मुजफ्फर अहमद, *चंदेरी : इतिहास और विरासत*, चंदेरी, 2005.
- मिश्रा वी. एन., *एव्यूलोषन ऑफ दी ब्लेड एलिमेन्ट इन दी स्टोन इन्ड्रस्ट्री ऑफ रॉक शेल्टर–III एफ 23ए भीमबेटका*, सम्पा. आर. के. शर्मा, इन्डियन आर्कियोलॉजी न्यू पर्सपेक्टिव, आगम कला प्रकाषन, दिल्ली, 1982,. पृ. 7–13.
- राजन, के. वी. सौन्दर, *प्रिहिस्टॉरिक कल्चर क्रोनोंलॉजी इन मध्यप्रदेष*, सम्पा. आर. के. शर्मा, इन्डिय आर्कियोलॉजी न्यू पर्सपेक्टिव, आगम कला प्रकाषन, दिल्ली, 1982.
- सलाहुद्दीन, सुल्तान, *'तिलहरी' एक नवीन प्रागैतिहासिक पुरास्थल*, सम्पा. अम्बिकादत्त शर्मा, मध्यभारती, मानविकी एंव समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध–पत्रिका संस्करण 73 जुलाई–दिसम्बर, डॉ. हरीसिंह गौर विष्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, 2017.
- संकालिया, एच. डी., *स्टोन एज टूल्स देयर टेक्नीक्स नेम ऐण्ड प्राब्लम फंषन्स*, डेक्कन कालेज, पूना, 1964.
- शर्मा, राजकुमार, *मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के पुरातत्त्व का संदर्भ ग्रन्थ*, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2010.
- शर्मा, राजकुमार, *मध्यप्रदेश का इतिहास*, खण्ड–1, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2010.
- वाकणकर, विष्णु श्रीधर, *भारत के चित्रित शैलाश्रय*, संचनालय पुरातत्त्व, अभिलेखगार एवं संग्रहालय, भोपाल, मध्यप्रदेष, 2011.